SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

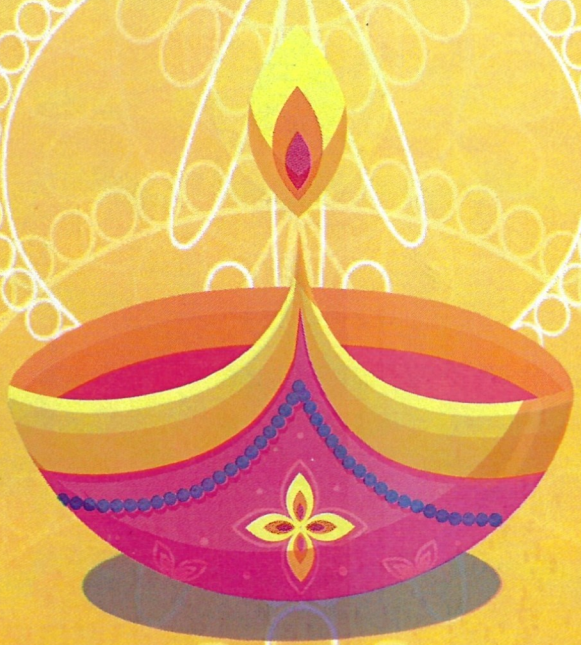

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

Sr.No	*Title of the Paper* & Author's Name	Pg.No
29	महाप्राण निराला के काव्य में देश-प्रेम और समाज- **डॉ. कृष्ण बिहारी रॉय**	134
30	दामोदर मोरे की अम्बेडकरवादी कविता का भावसौंदर्य- **प्रा.नितिन हिंदुराव कुंभार**	137
31	'गणित के सवाल' कहानी का अनुशीलन- **प्रा. डॉ. गौतम वाघमारे**	142
32	शिक्षा मनोविज्ञान में व्यक्तित्व की संकल्पना- विकास एवं सिध्दान्त- **डॉ. एन. एन. लांडगे**	144
33	नवजागरण के पुरोधा : ईश्वरचंद्र विद्यासागर- **फरीदा खातून**	147
34	नेतृत्व विकास के संदर्भ में संवाद कौशल्य – **प्रा.डॉ. अरुण धोंडू वळवी**	150
35	सोशल मीडिया के कर्तव्य और मर्यादाएं (फेसबुक के विशेष सन्दर्भ में)- **डॉ. भंडारे उद्धव तुकाराम**	154
36	राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में पारिस्थितिकीय बोध- **बीना बी. प्रजापति**	165
37	जीवन संघर्ष का दस्तावेज़ : 'ग्लोबल गांव के देवता'- **प्रा.डॉ.राजाराम बाबुराव तायडे**	167
38	मंगेश पाडगांवकर : एक चिंतन- **प्रा.डॉ.शुभांगी परांजपे (डोरले)**	171
39	समकालीन आंबेडकरी कवितेचा वेध घेणारा ग्रंथ- नव्वदोत्तर आंबेडकरी कवितेची मिमांसा – **डॉ. विनोद वासुदेव उपर्वत**	176
40	कोकणा समाजाचे शिक्षण आणि शैक्षणिक समस्या- **प्रा. एस. टी. धुम / डॉ. ए. डी. गोस्वामी**	180
41	भारतीय महिला बँकेची भविष्यातील वाटचाल -**प्रा. डॉ. जयश्री पुरूषोत्तम सरोदे**	187
42	स्वामी स्वरूपानंद यांच्या अमृतधारामधील जीवनमूल्ये- **डॉ. महेश सखाराम बावधनकर**	190
43	वस्तू व सेवा कराची चार वर्षे – यश / सामर्थ्य आणि उणिवा - **डॉ. पी. के. पाटील**	196
44	ग्रामीण महिलांच्या चिरंतर विकासात स्वयंसहाय्यता बचतगटाचे योगदान (विशेष संदर्भ : ता.चोपडा, जि.जळगाव) - **प्रा. शैलेश बाबुराव पाटील**	200
45	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार- **प्रा. डॉ. बिराजदार श्रीमंत महादेव**	203
46	ग्रंथालय संगणकीकरण आणि व्यवस्थापन- **रीता श्रीमंतराव कदम**	207
47	भारतीय शेतकऱ्यांसमोरील आव्हाने- **डॉ. शशिकांत लक्ष्मणराव भोज**	210
48	लोककवी वामनदादा कर्डक यांच्या कवितेतील आंबेडकरी तत्वज्ञान - **प्रा. डॉ. वाल्मिक शंकर आढावे**	216
49	मानसिक स्वास्थ्य आणि आत्महत्या : एक सामाजिक समस्या- **प्रा. साहेबराव के. राठोड**	220
50	मुजाहिदे आझादी मौलाना हसरत मोहानी बहेसियत सियासतदान (उर्दू) **प्रा. डॉ. जैदी . एस . एच.**	223

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

33

नवजागरण के पुरोधा : ईश्वरचंद्र विद्यासागर

फरीदा खातून
असिस्टेंट प्रोफेसर विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)
पंचकोट महाविद्यालय पुरुलिया

नवजागरण या रेनासां का पारिभाषिक अर्थ है –'प्राचीन ज्ञान और संस्कृति को नए वातारण और काल के परिप्रेक्ष्य में भविष्य के लिए रूपायित करना'। एक रयी चेतना के आधार पर ऐसे भविष्य का निर्माण जिसमें मानव के विचार शक्ति की संभावनाओं पर पूरी आस्थ रखी जाए। भारत में नवजागरण को काल 18वीं शती के मध्य से आरंभ होकर बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक मानना चाहिए अर्थात इस प्रक्रिया में दो सौ वर्ष लग गए। ऐतिहासिक कारणों से भारत में नवजागरण की जहर बंगाल में आरंभ हुई। 18वीं शताब्दी में, विश्वव्यापी यातायात और संचार व्यवस्था का आरंभ यूरोप और इंग्लैंड में रेनासां और औद्योगिक क्रांति ; भारत में ब्रिटीश साम्राज्य की स्थापना और प्रशासन में कुछ व्यावहारिक नीतियों का प्रवेश, कई सुसंस्कृत पदाधिकारियों का इस देश में आगमन; ईसाई मिशनरियों का धर्म प्रचार के लिए कार्य और कलकत्ता प्रदेश की राजधानी बनना, आदि कुछ प्रमुख कारण थे -- जो बंगाल में नवजागरण के प्रमुख कारक थें।

19वीं सदी में हुए नवजागरणों के फलस्वरूप आधुनिक भारत का या स्वरूप प्रकट होने लगा। इस समय परिवर्तन की जिस प्रक्रिया का आरंभ हुआ उसने भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था को इतना अधिक प्रभावित किया जितना पिछले एक हजार वर्ष की घटनाओं ने भी नहीं किया। बंगाल के नवजागरण की शुरुआत राजा राममोहन राय से लेकर रवींद्रनाथ ठाकुर तक माने जाते हैं। राजा राममोहन राय से रवींद्रनाथ टैगोर के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी हैं -- ईश्वरचंद्र विद्यासागर। इन्हें भारतीय इतिहास में शिक्षक, फिलॉसफर और समाज सुधारक के तौर पर याद किया जाता है। 26 सितंबर 1820 को बंगाल के मेदिनीपुर में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में जन्में विद्यासागर वास्तव में विद्या के सागर थे।

प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई। इसके बाद 1829 में एक प्रतियोगिता में उनकी तेज बुद्धि को देखते हुए उनका नाम विद्यासागर पड़ गया। 1941 तक करीब 12 साल तक अध्ययन के बाद कलकत्ता के संस्कृत कॉलेज में प्रोफेसर पर पर नियुक्त हुए। उनके कार्यकला में कॉलेज सुधार का केंद्र बन गया। जगन्नाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है --"राममोहन राय ने समाज सुधार की दिशा में जो कार्य किया पर उसे विद्यासागर ने अपने ढंग से ब्राह समाज से अलग रहते हुए, आगे बढ़ाया, समाज सुधरक को सबसे पहले नवचेतना का काग्र करना पड़ता है जो उन्होंने किया।"1

लेकिन पुस्तकें लिखने अथवा पत्रिकाओं में लेख लिखने से समाज को बदलना संभव था। सामाजिक परिवर्तन के लिए जिस प्रकार की सक्रियता की जरूरत होती है, वैसी सक्रियता के साथ वे व्यवहार के धरातल पर सामाजिक क्षेत्र में उतरे। उस समय विधवा स्त्री समाज की दुखती हुई रग थी। नारकीय यंत्रणा भोगने के लिए वह अभिशप्त थी। ईश्वरचंद्र ने इनकी अवस्थ पर केवल लिखित अथवा मौखिक संवेदना ही प्रस्तुत नहीं किया बल्कि पुनर्विवाह का पक्ष सामने रखकर इनकी दशा में सुधार का प्रस्ताव पारित किया। अध्यापक भट्टाचार्य एवं अध्यापक चक्रवर्ती ने इनके इस कार्य की सराहना करते हुए लिखा है --"एई एकटिमात्र काजेर जना तार नाम आधुनिक भारतेर इतिहास के अक्षय हये थाकबे। समाज संस्कारेर क्षेत्र सती दाह प्रचार अलुप्ति जे प्रगतिशीलतार सूचना करे तार परिपूर्णता लाभ घटे विधवा विवाह संक्रांत आइन प्रचलनेर मध्य दिये।"2

अर्थात मात्र इस काम के लिए इनका नाम आधुनिक भारत के इतिहास में सुरक्षित रहेगा। समो सुधार के क्षेत्र में सतीदाह प्रथा का अंत जिस प्रगतिशीलता की सूचना करता है, उसकी परिपूर्णता विधवा विवाह कानून के प्रचलन ने पूरा कर दिया।

विद्यासागर ने मौखिक संवेदना ही प्रस्तुत नहीं की बल्कि पुनर्विवाह का पक्ष सामने रखकर विधवाओं की दशा में सुधार का प्रस्ताव पारित किया। स्त्रियों की दशा सुधारने की दिशा में विद्यासागर विशेष सक्रिय रहे। इन्होंने यह सिद्ध किया कि शास्त्र भी विशेष परिस्थितियों में महिलाओं को फिर से विवाह करने की अनुमति देता है। इन विशेष परिस्थितियों में मुख्य थी -

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.5
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

- पति की मृत्यु। उन्होंने पराशर संहिता की टीका के आधार पर पुस्तकें लिखकर अपना मत प्रकट किया तथा विरोधियों की आपत्तियों का करारा जवाब भी दिया। इनके प्रयासों से उत्साहित होकर भारत सरकार ने 1856 में एक अधिनियम पारित करके विधवाओं को पुनर्विवाह करने का अधिकार प्रदान कर दिया। सरकार ने कानून बनाकर सामाजिक सुधार में सहातया की। विद्यासागर ने स्वयं कुछ विधवा स्त्रियों का पुन: विवाह कराकर समाज में अपने साहसिक एवं क्रांतिकाीर सोच का परिचय दिया। इतना ही नहीं, बहुपत्नीत्व प्रथा जो कि स्त्री जीवन का त्रासद पक्ष था -- इसकी भी कल आलोचना की। दहेज के लालच में कुलीन परिवार के पुरुष एक से अधिक स्त्रियों संग विवाह रचाते थे। बाद में वे उनका नाम तक भूल जाते थे। विद्यासागर ने इस तरह के स्वार्थी कुकृत्य की घोर आलोचना की। माइकल मधुसूदन दत्त ने उनकी सराहना करते हुए लिखा है --"विद्यासागरेर मध्य छिलो प्राचीन ऋषिर प्रज्ञा, इंगरेजरे उद्दाम एवं एमजन बांगाली मायेर ममत्वबोध।"

"Vidyasagar had the genious and wisdom of an ancient sage, the energy of an Englishman and the heart of a Bengalee mother."[3]

शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्यासागर की देन अभुतपूर्व है। ग्रामंचलों में स्कूल स्थापना के लिए इन्होंने लॉर्ड हार्डी संग मिलकर भरपूर प्रयास किया। हालांकि इस कार्य में इन्हें मनचाही सफलता नहीं मिली। शिक्षा विभाग में निर्देशक पद पर रहते हुए केवल चार वर्षों में बंगाल के विभिन्न प्रातों में लगभग 20 मॉडल स्कूलों की स्थापना की। संस्कृत' कॉलेज में प्रिंसिपल बनने से पहले तक वहाँ ब्राह्मण और वैश्य जाति के लड़के ही दाखिला ले सकते थे। प्रिंसिपल बनने के छह महीने के अंदर इन्होंने सभी जातियों के लिए कॉलेज के द्वार खोल दिए। ब्राह्मण शिक्षकों एवं नगर के संस्कृत पंडितों ने विद्यासागर के इस उठाए गए कदम की कड़ी आलोचना की। लेकिन इन्होंने अपना फैसला नहीं बदला। वीर भारत तलवार ने इनकी भूमिका पर चर्चा करते हुए लिखा है --"बंगाल के शिक्षा के क्षेत्र में विद्यासागर की दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका बंगला भाषा को शिक्षा को माध्यम बनाने में था। जिसके लिए उनहोंने सरहार का सहयोग लिया और जहाँ सहयोग नहीं मिला वहाँ निजी प्रयत्नों से कर दिखाया। यूरोपीयन ज्ञान विज्ञान और अंग्रेजी भाष को भारतीयों के आधुनिक विकास के लिए अनिवार्य ठहराने वाले विद्यासागर ने शिक्षा का माध्यम बंगला को बनाने पर जोर इसलिए दिया क्योंकि वे महसूस करते थे कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और नवजागरण को देहाती इलाकों तक ले जाने का काम अंग्रेजी के माध्यम से नहीं किया जा सकता है। इसके लिए बंगला ही शिक्षा का माध्यक हो सकती है।"4

साधारण छात्रों के लिए बोधमूलक पुस्तकों की रचना की जिनमें "वर्ण परिचय', 'कथामाला', 'व्याकरण कौमुदि', 'संस्कृत व्याकरण व क्रमणिका' इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

जिस प्रकार भारतेंदु ने हिंदी को शिक्षा के माध्यम के लिए अनिवार्य तत्व माना उसी प्रकार विद्यासागर का मानना था कि मातृभाषा में व्यक्ति और समाज का विकास संभव है। कवींद्र रवींद्र ने विद्यासागर की सेवाओं का वर्णन करते हुए लिखा था --"बंगला भाषा को पूर्व-प्रचलित अनावश्यक समास के आडंबर से मुक्त करके उकसे पदों के बीच के अंशों को युक्त करने का सुनियम स्थापित करके विद्यासागर ने बंगला गद्य को केवल सबके व्यवहार के योग्य बनाया, ऐसी बात नहीं, इन्होंने उसे सुंदर बनाने का भी निरंतर प्रयास किया। गंवारू पंडिताई और गंवारू बर्बरता दोनों के हाथ से उद्धार कर उन्होंने इसे संसार की भद्र सभा की उपयुक्त आर्य भाषा के रूप में प्रस्तुत किया।"5

इस प्रकार विद्यासागर ने बदलते समय के साथ अपने युग के नब्ज को पहचाना। समाज में फैली कुरीतियों एवं पाखंडों का खंडन कर हाशिये पर जी रहे लोगों में आत्म-विश्वास भर दिया1 उनका कर्म सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक धरातल पर था। उनकी यह कर्मठता, सामाजिकता एवं मानव मात्र के लिए उनकी सहज संवेदना हमारे लिए अनुकरणीय है। वे सही अर्थों में नवजागरण के पुरोधा कहलाने के अधिकारी हैं।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद, आधुनिक भारत का इतिहास (1707 से 1947 तक), उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, संस्करण : 1974, पृष्ठ संख्या -- 450

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

2. अध्यापक भट्टाचार्य एवं अध्यापक चटर्जी, प्रकाशक सत्यजीत सान्याल, 6ए, कॉलेज रोड कोलकाता, संस्करण : 2007, पृष्ठ संख्या -- 322

3. अध्यापक गोपालचंद्र पहाड़ी श्री तारा प्रकाशनी, भारतेर इतिवृत, 206 विधान सरणनी, कोलकाता-700008, संस्करण : 2003, पृष्ठ संख्या -- 314

4. तलवार वीर भारत, रस्साकशी, (उन्नीसवीं सदी का नवजागरण और पश्चिमोत्तर प्रांत) वाणी प्रकाशन, 4695, 21ए, दरियागंज, नयी दिल्ली - 110002, प्रथम संस्करण : 2017

5. गुप्त मन्मथनाथ, बंगला साहित्य दर्शन (बंगला के प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य का विशद अध्ययन -- सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, संस्करण : 1960, पृष्ठ संख्या -- 102)

■■■